वार्षिक प्रतिवेदन

2005-2006

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

पुष्कर मेले में विश्व व्यापार संगठन की नीतियों के विरोध के अन्तर्गत भागीदारी निभाने जाते संस्था के कार्यकर्त्तागण

UNDP परियोजनान्तर्गत बैंक ऋण प्राप्त कर बकरी पालन परियोजना से लाभान्वित समूह की महिला

संस्था के सहयोग से भैंस पालन से लाभान्वित समूह की महिला

कपार्ट जयपुर के सहयोग से ग्राम दाँता में निर्मित शवदाह गृह का अवलोकन करते संस्था सचिव श्री शंकर सिंह रावत

सोशल मोबिलाइजेशन परियोजना के अन्तर्गत क्रय की गयी बकरियों को चराती प्रगति स्वयं सहायता समूह की महिलाएँ

बाल श्रमिक परियोजना संस्था, अजमेर के फील्ड आफीसर श्री आरिफ मोहम्मद, बाल श्रमिक विद्यालय, मुहामी के विद्यार्थीयों को शिक्षण सामग्री प्रदान करते हुए

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिलाएँ कार्यक्रम में भाग लेते हुए

स्तनपान सप्ताह कार्यक्रम में ग्रामीण महिलाओं एवं पुरुषों को स्तनपान की उपयोगिता की जानकारी देते सिस्टर रूपीना, आर सी डी

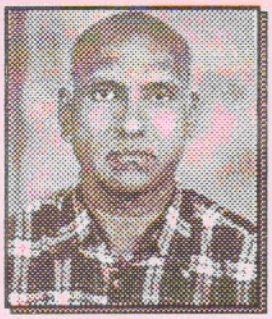

अनिलकुमार माथुर

अध्यक्षीय सम्बोधन

शासन में नागरिकों की सहभागिता सुनिश्चित हो, पारदर्शिता हो और शासक शासितों के प्रति उत्तरदायी बने तथा सत्ता का विकेन्द्रीकरण हो तो सच्चे अर्थ में प्रजातंत्र का सृजन होगा। विकास के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए शासन पर निगरानी रखना इस दृष्टि से महत्वपूर्ण हो जाता है। इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए साक्षरता में वृद्धि, बाल मृत्युदर में कमी, मातृत्व मृत्युदर में कमी, गरीबी में कमी तथा बेकारी का निवारण अनिवार्य है। इसमें गैरसरकारी संगठनों की भूमिका भी विशेष महत्वपूर्ण बन जाती है अतः विकास के लक्ष्य पूरे करना गैर सरकारी संगठनों के लिए जितना महत्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण यह देखना है कि शासन की व्यवस्था अधिक लोकानिमुख बने।

संस्था द्वारा तीन पंचायत समितियों के 48 गांवों में समग्र विकास के लिए जो कार्य किये जा रहे हैं उन्हें यह वार्षिक प्रतिवेदन दर्शाता है।

संस्था के कार्यकर्त्ताओं की कड़ी मेहनत व लगन के कारण ही संस्था प्रभावी कार्य कर सकी।

मैं संस्था के उज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

अनिलकुमार माथुर

अध्यक्ष

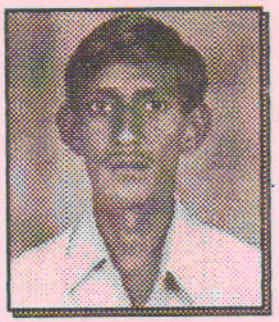

शंकर सिंह रावत

प्रस्तावना

समाज सेवा के क्षेत्र में गैर सरकारी स्वैच्छिक संगठनों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। देश के विकास की कल्पना गांवों के विकास से ही साकार होना सम्भव है। गांवों की बहुआयामी समस्याओं के निराकरण व विकास के लिए गैर सरकारी संगठनों का प्रमुख कार्यक्षेत्र गांव ही हो सकते हैं। आज विकासशील क्षेत्र चुनौतियों भरा बनता जा रहा है। बढ़ती हुई अराजकता, भ्रष्टाचार देश के विकास में बहुत बाधक है। सरकार विकास करने का कितना ही दावा करे परन्तु वास्तविकता इससे बहुत दूर है। गांवों में विकास का नामों निशान नहीं है लोगों में गरीबी, अशिक्षा, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, बेरोजगारी आदि बढ़ती जा रही है। राजस्थान में तो अकाल ने आर्थिक रूप से किसानों की कमर तोड़ दी है ऐसे समय में गैरसरकारी संगठनों की भूमिका और बढ़ जाती है।

इस क्रम में हमारी संस्था अपने सतत् प्रयासों से अजमेर जिले की तीन पंचायत समितियों को यथा श्रीनगर, सिलोरा व भिनाय के पिछडे क्षेत्र के 48 गांवों में विकास की विभिन्न परियोजनाओं पर सफलतापूर्वक कार्यकर रही है। जो इस वार्षिक प्रतिवेदन में दर्शाय गये हैं।

संस्था को देश की सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं का आर्थिक, वैयक्तिक सहयोग एवं मार्गदर्शन मिला उसके लिए संस्था उनकी आभारी है।

मैं इस गतिशील संस्था के उज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शंकर सिंह रावत

सचिव

ग्रामीण महिला विकास संस्थान - बूबानी, अजमेर (राज.)

प्रगति रिपोर्ट : वर्ष 2005-2006

संस्थान कार्यक्षेत्र एवं पृष्ठभूमि

ग्रामीण महिला विकास संस्थान एक गैर सरकारी स्वयं सेवी संस्था है, जो कि राजस्थान पंजीकरण अधिनियम-1958 की धारा 28 के तहत एवं आयकर अधिनियम-1961 की धारा 12ए 'ए' व 80-जी के तहत पंजीकृत है।

संस्था का प्रधान कार्यालय मदनगंज किशनगढ़ जिला-अजमेर (राजस्थान) एवं शाखा कार्यालय ग्राम बूबानी पंचायत समिति श्रीनगर एवं ग्राम भिनाय, पंचायत समिति भिनाय जिला-अजमेर में स्थित है।

राजस्थान राज्य के अजमेर ज़िले के श्रीनगर, सिलोरा एवं भिनाय पंचायत समितियों की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यहाँ पर वर्षा का अभाव है। पिछले 6-7 वर्षों से लगातार अपर्याप्त वर्षा के कारण अकाल की स्थिति बनी हुई है। क्षेत्र का पेयजल स्तर निरन्तर घटता जा रहा है और पेयजल समस्या ने गम्भीर रूप ले लिया है। अकाल रूपी दानव ने गाँवों में हाहाकार मचा रखा है। इसका सबसे ज़्यादा प्रतिकूल प्रभाव प्रकृति एवं पशुधन पर पड़ा है, जिससे प्रकृति एवं पशुधन की अत्यधिक हानि हुई है एवं मानव जीवन पूर्णरूपेण प्रभावित हुआ है।

यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन है। वर्षा की कमी से कृषि कार्य सम्भव नहीं हो पा रहा है और बिना कृषि उत्पादन के पशुपालन की कल्पना तक नहीं की जा सकती। जिसका दुष्प्रभाव लोगों की आजीविका पर पड़ा है व उनका आर्थिक संकट बढ़ा है। परिणामत: आजीविका के लिए लोग अपने गावों से पलायन कर रहे है बालश्रम में बढोतरी होती जा रही है फूल से नन्हे बच्चों का बचपन प्रभावित हो रहा है वे सभी पढ़ाई से वंचित होते जा रहे है।

क्षेत्र में बाल विवाह, निरक्षरता, बालिका शिक्षा की समस्या भी बनी हुई है। लिंग भेद की स्थिति भी है। लड़की के बजाय लड़कों को पढ़ाते लिखाते हैं और उनको अन्य कामों में सहभागी बनाते हैं। पुरुष प्रधान इस समाज में महिलाओं की सहभागिता नगण्य है। वह स्वतन्त्र रूप से निर्णय नहीं ले सकती तथा विकास की गतिविधियों में सहभागी नहीं बन सकती है।

अत: उपरोक्त समस्याओं से निजात पाने एवं समाज में व्याप्त विषमताओं पर नियन्त्रण पाने के लिए संस्था विगत 8-9 सालों से प्रयासरत है तथा विकास की विभिन्न गतिविधियों यथा शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला विकास, बाल विकास, बाल श्रम उन्मूलन, बालिका शिक्षा, पर्यावरण, उन्नत कृषि तकनीक, अकाल राहत रोज़गार मुहैया कराने आदि पर संस्था अपने अनुभवी कार्यकर्ता के साथ निरन्तर प्रयासरत हैं। उक्त कार्यों में विभिन्न संस्थाओं का आर्थिक सहयोग एवं मार्ग-दर्शन मिल रहा है, जिनका नाम आगे वर्णित है।

विज़न :-

ऐसे सशक्त समाज की स्थापना जो शिक्षा, स्वास्थ्य एवं आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हों।

मिशन :-

मानवीय व प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग से आगामी 5 सालों में अजमेर ज़िले में पिछड़े, अभावग्रस्त एवं ग़रीब समाज को साथ ही वंचित वर्ग खासकर महिला वर्ग को सशक्त व आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाना एवं बेहतर शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाएं सुनिश्चित करना।

लक्ष्य :-

अजमेर ज़िले की 3 पंचायत समितियाँ श्रीनगर, सिलोरा एवं भिनाय की 50 ग्राम पंचायतों में निम्न लक्ष्य निर्धारित हैं-

1. स्वास्थ्य के क्षेत्र में

- शिशु मृत्यु दर में 20 प्रतिशत तक कमी लाना।
- स्वास्थ्य सम्बन्धी सरकारी सुविधाएं उपलब्ध कराना।
- सुरक्षित मातृत्व एवं प्रसव तथा प्रजनन की जानकारी उपलब्ध कराना।
- आवश्यक एवं सस्ती दवाइयाँ समयानुसार उपलब्ध कराना।
- ग़रीब एवं वंचित वर्ग को नि:शुल्क चिकित्सा सेवाएं एवं दवाइयाँ मुहैया कराना।

2. शिक्षा के क्षेत्र में

- 3-14 आयु वर्ग के न्यूनतम 50 प्रतिशत बालक-बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ना।
- विद्यालयों में बच्चों के ठहराव की स्थितियाँ बनाना।
- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार।
- सहशैक्षिक गतिविधियों का संचालन।

मंच पर आसीन श्रीमती सरिता गैना, जिला प्रमुख एवं क्षेत्रीय प्रचार प्रसार अधिकारी श्री अनुभव बैरवा महिला समुहों का राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की जानकारी देते हुए।

3. प्राकृतिक संसाधन के प्रबन्धन के क्षेत्र में

- परम्परागत संसाधनों को विकसित करना।
- 500 हैक्टर भूमि तक में जल संरक्षण एवं संग्रहण।
- किसानों की क्षमता वर्द्धन पर उन्नत कृषि को बढ़ावा देते हुए आत्मनिर्भर बनाना।
- उन्नत कृषि तकनीकी की जानकारी देना तथा उन्नत खाद, बीज आदि उपलब्ध कराना।

उद्देश्य :-

1. स्वास्थ्य के क्षेत्र में

- ग्रामीण क्षेत्र में ग्रामीणों को स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करते हुए उन्हें अच्छा स्वास्थ्य बनाये रखने में मदद करना एवं मातृ-शिशु कल्याण कार्यक्रम को गाँव-गाँव तक पहुंचाना।

2. **शिक्षा के क्षेत्र में**

- बाल श्रम उन्मूलन करते हुए निम्न आय वर्ग के परिवार के लड़के-लड़कियों को उचित शिक्षा उपलब्ध कराना।

3. **प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन के क्षेत्र में**

- कृषि एवं पशुपालन के लिए ग्रामीणों को आधुनिक जानकारियाँ उपलब्ध कराकर उन्हें अधिक पैदावार एवं ज़्यादा पशुधन के लिए प्रोत्साहित करते हुए उनकी समस्याओं का समाधान करना।
- पर्यावरण को स्वच्छ बनाये रखने के लिए पेड़-पौधे लगाने के लिए लोगों को जागरुक करना।
- भूमि कटाव को रोकने हेतु मेढ़बन्दी कार्य करवाना।
- जल संग्रहण के क्रम में नाडी निर्माण व मरम्मत कार्य करवाना।

जिला प्रमुख श्रीमती सरिता गैना, रात्रि कालीन पाठशाला में शिक्षा का महत्व बताते हुए एवं मंच पर आसीन विभिन्न गणमान्य अधिकारी।

गतिविधियाँ :-

1. **स्वास्थ्य के क्षेत्र में**

- गर्भवती महिला एवं 0-3 आयु वर्ग के बच्चों का सर्वे कराना।
- माँ एवं बच्चों का सम्पूर्ण टीकाकरण कराना एवं उन्हें उचित पोषाहार वितरण कराना।
- अप्रशिक्षित दाइयों एवं ग्राम स्तरीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण दिलवाना।
- सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं को जन समुदाय तक पहुंचाना।
- प्रसव पूर्व एवं बाद की सावधानियों की जानकारी प्रदान करना एवं इस हेतु कार्यशालाओं का आयोजन करना।
- किशोरियों को प्रजनन एवं प्रसव सम्बन्धी जानकारियाँ देना।
- परिवार नियोजन के विभिन्न साधनों की जानकारी देना एवं उपलब्ध कराना।
- एड्स जागरुकता कार्यक्रमों का संचालन करना।
- राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय सरकारी कार्यक्रमों में सहयोग करना।
- ग़रीब एवं असहाय लोगों के लिए नि:शुल्क दवाइयों की व्यवस्था करना।

2. **शिक्षा के क्षेत्र में**

- वंचित बालक / बालिकाओं का सर्वे कराना।
- स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र व 3-5 आयु वर्ग के बच्चों के लिए बालवाड़ी या आँगनबाड़ी केन्द्रों का संचालन करना।

- शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षित करना तथा सहायक शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना।
- बच्चों का स्कूलों में ठहराव सुनिश्चित करने के लिए पोषाहार व खेल सामग्री की व्यवस्था करना।
- बाल श्रमिकों के लिए शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा प्रशिक्षणों आदि की व्यवस्था करना।

3. प्राकृतिक संसाधन के प्रबन्धन के क्षेत्र में

- जल संग्रहण एवं संरक्षण के लिए तालाब / नाडी निर्माण, मरम्मत, एनीकट, चेकडैम, मेढ़बन्दी आदि कार्य संचालित करना।
- परम्परागत संसाधनों का पुनरुत्थान करवाना एवं चारागाह विकास कार्य सम्पादित करना।
- उन्नत खाद, बीज एवं दवाइयाँ तथा तकनीकी कृषि जानकारी उपलब्ध कराना।

नाडी निर्माण का कार्य करते हुए ग्रामीण सहभागी।

- क्षमता वर्धन के अन्तर्गत प्रशिक्षणों, कार्यशालाओं एवं शैक्षिक भ्रमणों का आयोजन करना।
- पशुपालन एवं पशु नस्ल सुधार कार्यक्रम संचालित करना।
- लोगों को आर्थिक दृष्टि से मज़बूत एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए घरेलू उद्योगों तथा पशुपालन, डेयरी, मछली पालन, मुर्गी पालन आदि को बढ़ावा देना।

रणनीतियाँ

- ग्राम स्तरीय बैठकों का आयोजन करना।
- वी.डी.सी. एवं महिला मण्डलों का गठन करना।
- प्रचार-प्रसार हेतु वीडियो शो, सांस्कृतिक कार्यक्रम, नुक्कड़ नाटक, कठपुतली कार्यक्रम आदि का आयोजन करना।
- संगठन के माध्यम से कार्य करना।
- कार्यक्रमों में लोगों की एवं महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना।
- शैक्षिक भ्रमणों का आयोजन करना।
- लोगों की विशेषत: महिलाओं की पंचायतीराज में भागीदारी बढ़ाना।
- सरकार एवं सरकारी गतिविधियों में तालमेल एवं सम्बन्ध बढ़ाना।
- ग़ैर सरकारी संस्थाओं से सम्पर्क कर मार्ग-दर्शन एवं सहयोग प्राप्त करना।

सुरक्षित मातृत्व एवं बाल जीवितता कार्यक्रम

संस्था विगत 3 वर्षों से CRS जयपुर व RCD SSS, मदार, अजमेर के सहयोग से SMCS कार्यक्रम का संचालन कर रही है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत गर्भवती महिलाओं एवं नवजात शिशुओं व एक साल तक के बच्चों को विभिन्न बीमारियों से बचाने के लिए टीकाकरण आदि किये जाते हैं। साथ ही इन्हें कुपोषण से बचाने के लिए उपयुक्त पोषाहार दिया जाता है।

इस साल संस्था ने पंचायत समिति भिनाय की ग्राम पंचायत बूबकिया एवं धातौल के 10 गाँवों में 658 सहभागियों के साथ कार्य किया

परियोजना के उद्देश्य

- समस्त गर्भवती महिलाओं एवं एक साल से कम आयु के बच्चों को विभिन्न रोगों की रोकथाम के लिए उपयुक्त टीके लगवाकर उनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाना।
- खसरे से होने वाले रोगियों की संख्या में 90 प्रतिशत तथा खसरे के कारण होने वाली मृत्यु दर में 95 प्रतिशत तक कमी लाना।
- नवजात शिशुओं को होने वाले टिटनेस को मिटाना।
- गर्भवती महिलाओं एवं 0-3 आयु वर्ग के बच्चों को कुपोषण से बचाने के लिए उन्हें सन्तुलित पोषाहार देना।

परियोजना में लाभान्वित वर्ग

- समस्त गर्भवती महिलाएं
- समस्त 0-3 आयु वर्ग के बच्चे

स्तन पान सप्ताह के अर्न्तगत ग्रामीण महिलाओं को जानकारी देते हुए

रणनीति

सरकार ने पूरे राज्य में गुरुवार को टीकाकरण दिवस घोषित किया है। अत: राजकीय चिकित्सालयों एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर प्रत्येक गुरुवार को टीकाकरण करवाया जाता है।

इस कार्य को पूरा करने के लिए आर.सी.डी. समाज सेवी संस्था व ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा V.H.W. सुपरवाइज़र, स्वास्थ्य कमेटी, स्वास्थ्य समन्वयक आदि के द्वारा ANM का सहयोग लेकर गाँवों में सम्पूर्ण टीकाकरण कराना। साथ ही अलग-अलग गाँवों में भिन्न तारीखें निश्चित कर लक्षित वर्ग को सन्तुलित पोषाहार वितरण करना।

सत्र के दौरान परियोजना में की गई गतिविधियाँ

- **पोषाहार वितरण :** RCD जयपुर व समाज सेवी संस्था, मदार-अजमेर द्वारा भिनाय पंचायत समिति की दो ग्राम पंचायतों बूबकिया एवं धातौल पंचायत के 10 ग्रामों में 658 सहभागियों को कुपोषण से बचाने के क्रम में प्रतिमाह दलिया एवं तेल के रुप में पोषाहार दिया गया। यह पोषाहार विटामिन युक्त एवं गुणकारी है।

- **टीकाकरण :** बैठकों, नुक्कड़ नाटकों, स्वास्थ्य शिक्षा आदि के द्वारा लोगों को टीकाकरण के प्रति जागरुक किया गया। परियोजना कार्यकर्ताओं द्वारा ANM आदि से मिलकर गर्भवती महिलाओं एवं बच्चों का आवश्यक टीकाकरण करवाया गया। साथ ही साफ़-सफ़ाई की जानकारियाँ भी दी गईं। गन्दगी से होने वाली बीमारियों के ख़तरों के बारे में भी बताया गया। हर माह बच्चों को वजन एवं सहभागियों की स्वास्थ्य जाँच की गई।

- **स्वास्थ्य कमेटी बैठकें :** हर माह में निश्चित तारीख़ को अलग-अलग कमेटियों के साथ बैठकें आदि कर बेहतर स्वास्थ्य के साथ-साथ गाँव की अन्य समस्याओं पर चर्चा करते हुए समाधान के प्रयास किए गए।

- **महिला स्वयं सहायता समूह :** कार्यक्रम से जुड़े सभी गाँवों में SHG's के फायदे बताकर महिलाओं एवं लोगों को इसके लिए तैयार किया एवं 26 महिला समूहों का निर्माण किया। इस प्रयास से ग़रीब परिवारों को ब्याज़ खोरों के चंगुल से बचाया गया। SHG's की महिलाएं आत्मनिर्भर बनने के क्रम में विभिन्न रोज़गारोन्मुख गतिविधियाँ यथा- सिलाई, पशुपालन, दूध डेयरी, साबुन-सर्फ, मणिहारी सामान बेचना आदि कार्य कर रही हैं।

- **महिला दिवस आयोजन :** प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च, 2006 को मनाया गया। इस आयोजन में लगभग 800 महिलाएं एवं पुरुषों ने भाग लिया। इसमें महिलाओं के विभिन्न अधिकारों पर चर्चाएं की गईं। साथ ही रैली का आयोजन भी किया गया।

- **पल्स पोलिया अभियान में भागीदारी :** कार्यक्रम समन्वयक एवं स्टाफ़ ने ANM एवं अन्य कर्मचारियों के साथ मिलकर पल्स पोलियो अभियान में सहयोग किया।

- **विश्व स्तनपान दिवस आयोजन :** 8 अगस्त, 2005 को ग्राम पंचायत बूबकिया में विश्व स्तनपान दिवस मनाया गया जिसमें इस दिवस को मनाने एवं इसकी उपयोगिता पर विस्तार से समझाया गया। महिलाओं के साथ बच्चे के लिए माँ के दूध की उपयोगिता की चर्चा करते हुए। माँ का पहला दूध बच्चे के लिए उपयोगी और अमृत तुल्य होता है आदि बताया गया। साथ ही स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न बिमारियों जैसे HIV, AIDS, कैंसर एवं टी.बी. आदि की विस्तृत जानकारी दी गई।

- **पोषाहार सप्ताह :** 1 से 7 सितम्बर, 2005 तक ग्राम पंचायत बूबकिया एवं धातौल के 10 ग्रामों में पोषाहार सप्ताह आयोजन किया गया। इस आयोजन में गर्भवती महिलाओं एवं शिशुओं के पौष्टिक आहार के विषय में विभिन्न जानकारियाँ दी गईं। इस अवसर पर साधारण आहार को पौष्टिक आहार कैसे बनाया जाता है, बनाकर बताया गया।

- **विभिन्न प्रशिक्षण :** कार्यक्रम के तहत विभिन्न प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। CRS जयपुर एवं RCD समाज सेवी संस्था, मदार-अजमेर के सहयोग से VHW प्रशिक्षण एवं दाई प्रशिक्षण के साथ-साथ कार्यक्रम समन्वय (सुपरवाइज़र) आदि हेतु विभिन्न प्रशिक्षणों का आयोजन कराकर कार्यकर्ताओं का क्षमता वर्धन किया गया।

- **महिला स्वयं सहायता :** इस कार्यक्रम के तहत समाज सेवी संस्था, मदार द्वारा स्वीकृत 26 महिला

समूहों का संचालन किया जा रहा है। इन समूहों में 262 महिला सदस्य जुड़ी हुई हैं, जो अपनी छोटी-छोटी बचतों से 1,63,470/- रुपये बचत कर आपसी लेनदन द्वारा अपनी-अपनी ज़रूरतों को आसानी से पूरा कर रही हैं।

उक्त समूहों में से 80 प्रतिशत समूहों को बैंक से जोड़ दिया गया है और उन्हें ऋण दिलवाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

समूहों के प्राथमिक लक्ष्य

- महिलाओं में आपसी आत्मविश्वास बढ़ाना।
- ब्याज़खोरों से छुटकारा दिलवाना।
- आय वर्द्धन के उपाय सुझाकर प्रयोग में लेना।
- सरकारी एवं ग़ैर सरकारी योजनाओं की जानकारी, जुड़ाव एवं लाभ प्राप्त करना।

स्वयं सहायता समुह की महिलाए मासिक बैठक करते हुए।

निर्धारित लक्ष्यानुरूप संस्थान कार्यकर्ताओं ने उक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के क्रम में सतत प्रयास किये व लक्ष्यों को सफलता पूर्वक प्राप्त भी किया।

विशिष्ट बाल श्रमिक विद्यालय

भारत सरकार के श्रम मंत्रालय के सौजन्य से एवं बाल श्रम परियोजना संस्था, अजमेर के सहयोग एवं मार्गदर्शन से संस्थान पिछले 6 वर्षों से इस परियोजना के तहत विशिष्ट बाल श्रमिक विद्यालयों का सफल संचालन कर रहा है।

इन विद्यालयों में उन बाल श्रमिकों को शामिल किया जाता है, जो ख़तरनाक उद्योगों यथा- खांन, पत्थर तुड़ाई, पॉवरलूम आदि से किसी-न-किसी रूप से जुड़े हुए हैं। ऐसे बच्चों को वहाँ से हटाकर इन विद्यालयों में जोड़कर उनकी उम्र एवं स्तर के अनुसार 3 वर्षों में प्राथमिक शिक्षा देते हुए उन्हें शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ा जाता है। इस कड़ी में परियोजना स्वीकृति से वर्तमान तक लगभग 200 बाल श्रमिकों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ा जा चुका है।

संस्थान द्वारा शिक्षा के साथ साथ निम्न गतिविधियाँ भी सम्पादित कराई गई

- मासिक अभिभावक बैठकें,
- स्वास्थ्य परीक्षण,
- व्यवसायिक शिक्षा,
- पोषाहार,
- मासिक मूल्यांकन,
- राष्ट्रीय पर्व एवं जयन्तियाँ,
- नियमित निरीक्षण,
- जन श्री बीमा योजना से जुड़ाव
- स्टाईफण्ड।

विशिष्टि बाल श्रमिक विद्यालय के छात्र छात्रायें व्यावसियक शिक्षा के अन्तर्गत प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए।

अभिभावक बैठक : विद्यालय में प्रतिमाह अभिभावक बैठक का आयोजन किया जाता है। इसमें शिक्षा के साथ-साथ गाँव की अन्य समस्याओं पर भी बातचीत की जाती है। साथ ही अन्य शेष बच्चों को बालश्रम एवं जोखिमपूर्ण धन्धों से रोकने के सम्बन्ध में चर्चाएं एवं प्रयास किए जाते हैं।

स्वास्थ्य परीक्षण : बाल श्रमिक विद्यालय के बच्चों का प्रतिमाह नियमित रूप से ANM एवं अन्य डॉक्टरों के द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण करवाया जाता है। इसके तहत बच्चों का वज़न, ऊँचाई, बीमारी आदि की जाँच एवं बीमार बच्चों का नि:शुल्क इलाज करवाकर उनको स्वस्थ बनाए रखने के प्रयास किए जाते हैं।

व्यावसायिक शिक्षा : शिक्षा के साथ-साथ बच्चों के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर भी विशेष ज़ोर दिया जाता है ताकि बच्चे आगे चलकर आत्मनिर्भर बन सकें। इसके तहत सिलाई, कढ़ाई, कुर्सी बुनाई, मिट्टी एवं लकड़ी के खिलौने, साबुन-सर्फ आदि रोज़गारोन्मुख प्रशिक्षण दिए जाते हैं।

पोषाहार : बच्चों को प्रतिदिन सरकार द्वारा निर्धारित मीनू के अनुसार पोषाहार दिया जाता है। यह क्रम साप्ताहिक चलता है। साथ ही विद्यालय को मिड-डे मील योजना से भी जोड़कर पोषाहार में विविधता लाई गई है। इसके अलावा RCD समाज सेवी संस्था, मदार-अजमेर विद्यालय को अपनी S.F. परियोजना (कार्यक्रम) से जोड़कर पोषाहार के रूप में दलिया एवं तेल उपलब्ध करा रही है, जिससे बच्चों को प्रत्येक दिन अलग-अलग प्रकार का पौष्टिक भोजन प्राप्त हो जाता है। साथ ही नवोदय शिक्षा निकेतन, ढाणी पुरोहितान में 150 बच्चों का SF कार्यक्रम में व 40 बच्चों को ECDC कार्यक्रम से जोड़कर उन्हें पोषाहार में तेल दलिया उपलब्ध करवाया जाता है। इससे बच्चों के शारीरिक विकास में वृद्धि पाई गई। उक्त संस्था शिक्षा में गुणात्मक

सुधार हेतु समय-समय पर विद्यालय स्टाफ (अध्यापकों) को विभिन्न प्रशिक्षण भी देती है।

राष्ट्रीय पर्व एवं जयन्तियाँ : शाला में राष्ट्रीय पर्वों के साथ-साथ महापुरुषों की जयन्तियाँ भी मनाई जाती हैं। बाल सप्ताह भी मनाया जाता है। इनके माध्यम से महापुरुषों के जीवन में आई कठिनाइयों के बावजूद उनकी सफलताओं से बच्चों को अवगत कराया जाता है।

निरीक्षण : विद्यालय का समय-समय पर परियोजना निदेशक, संस्थान प्रमुख, स्टाफ, शिक्षा समिति, सरपंच एवं ग्रामीणों द्वारा निरीक्षण किया जाता है। इसमें मुख्य रूप से शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, पोषाहार, अनुशासन एवं अध्यापकों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।

जनश्री बीमा योजना से जुड़ाव : अध्ययनरत बच्चों का जनश्री बीमा योजना के अन्तर्गत बीमा करवाया गया। इसके तहत 100/- रुपये प्रतिवर्ष प्रति बालक प्रीमियम देय है। इस प्रकार यह बच्चे सुरक्षित भी हैं।

स्टाइफण्ड : इस विद्यालय में अध्ययनरत बाल श्रमिक के लिए परियोजना द्वारा प्रति बच्चा 100/- रुपये स्टाइफण्ड के रूप में उनके खते में जमा कराये जाते हैं। इस प्रकार परियोजना बच्चों को सुशिक्षित करने के साथ-साथ उनकी आर्थिक मदद भी कर रही है।

अन्य अध्ययनरत बच्चों को परियोजना के माध्यम से 3 वर्ष की अवधि में कक्षा 1 से 5वीं उत्तीर्ण करवाई जाती है।

राष्ट्रीय पर्यावरण जागरुकता अभियान 2005-2006

पिछले 6 वर्षों से लगातार सेवा मन्दिर, उदयपुर के आर्थिक सहयोग एवं मार्ग-दर्शन से हर बार अलग-अलग गाँवों में पर्यावरण के प्रति जागरुकता लाने के क्रम में शिविर एवं बैठकों के माध्यम से विभिन्न गतिविधियाँ संचालित की जाती रही हैं।

वर्मी-कम्पोस्ट शेड़ का निर्माण करती समूह की महिलाऐं

इस वर्ष भी उक्त संस्था के सहयोग से 'ठोस कचरा प्रबन्धन' विषय पर ग्राम पंचायत गेगल के ग्राम दाँता एवं ग्राम पंचायत नरवर के ग्राम टिठाना में दिनांक 27 से 29 मार्च, 2006 तक शिविरों का आयोजन कर इस विषय से सम्बन्धित विभिन्न जानकारियाँ दी गई। इसके अन्तर्गत 1. घरों से निकलने वाला कचरा, 2. औद्योगिक कचरा या ख़तरनाक कचरा, 3. जैविक दवाइयाँ या अस्पताल से निकला कचरा या ख़तरनाक कचरा, उक्त तीनों प्रकार के कचरों का किस प्रकार समुचित दोहन कर पर्यावरण को बचाया जा सकता है एवं इसके प्रयोग से वर्मी कम्पोस्ट आदि बनाने की विधि एवं इसके फ़ायदों के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही विभिन्न विषय विशेषज्ञों द्वारा उपयोगी

जानकारियाँ उपलब्ध करवाई गईं। साथ ही उपयोगी सामग्री के रूप में पुस्तकें एवं पेम्पलेट आदि वितरित किए गए।

आर्टस रयोजना के अर्न्तगत शवदाह गृह शैड का निर्माण

आर्ट्स परियोजना (शवदाह गृह शैड निर्माण- कपार्ट)

कपार्ट - जयपुर एवं दिल्ली का हमारे संस्थान को बहुत ही सराहनीय योगदान एवं सहयोग मिला है। यहाँ से समय समय पर नाड़ी निर्माण मरम्मत, चरागाह, मेढ़बन्दी, सम्बन्धी विभिन्न विषयों पर वर्कशॉप आदि के रूप में सहयोग मिलता रहा है।

इस वर्ष कपार्ट के आर्थिक सहयोग से हमें चार गाँवों में पाँच शवदाह गृह शैड बनाने की स्वीकृति आर्ट्स योजना के तहत मिली। स्वीकृति अनुसार संस्थान ने श्रीनगर पंचायत समिति में 4 शैड एवं सिलोरा पंचायत समिति में 1 शैड यानि कुल 5 शैड का निर्माण करवाकर लोगों को लाभान्वित किया।

निम्न प्रकार शवदाह गृह शैडों का निर्माण किया

क्र.सं.	गाँव का नाम	समाज/शमशान	ग्राम पंचायत	पंचायत
1.	खोड़ा गणेश	राजपूत	बूबानी	श्रीनगर
2.	खोड़ा गणेश	मेघवंशी	बूबानी	श्रीनगर
3.	दाँता	रावत	गेगल	श्रीनगर
4.	मुहामी	मेघवंशी	बूबानी	श्रीनगर
5.	ढाणी पुरोहितान	रावत	मालियों की बाड़ी	सिलोरा

इसी योजना के तहत जाली शैड परियोजना प्रस्तावित है।

सोशल मोबिलाइज़ेशन परियोजना

गत वर्ष से ही यह परियोजना संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम एवं ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आर्थिक सहयोग एवं मार्ग-दर्शन से संस्थान द्वारा अपने कार्य क्षेत्र के श्रीनगर पंचायत समिति के 15 ग्राम पंचायतों के 23 गाँवों के 45 समूहों में संचालित हैं एवं समस्या के समाधान के क्रम में उचित निर्णय लेती हैं। इन समूहों में 495 महिला सहभागी हैं। समूहों का सम्बन्धित बैंकों में खाता खुलवाया जा चुका है एवं 32,59,000/- रुपये का बैंक से ऋण दिलवाया जा चुका है। इन समूहों की लगभग 579963/- रुपये बचत हो चुकी है, जिससे आन्तरित ऋण प्रणाली द्वारा समूहों के ज़रूरतमन्द सदस्यों को ऋण दिया जाता है एवं उनकी क्षमता अनुरूप सरल किस्तों में ऋण का पुनर्भुगतान किया जाता है व पुन: किसी अन्य सदस्यों को ऋण उपलब्ध करा दिया जाता है।

परियोजना द्वारा समूहों की क्षमता वर्धन करने एवं उन्हे आत्मनिर्भर बनाने के क्रम में गतिविधियाँ संचालित करने एवं पूर्व में संचालित गतिविधियों को और प्रभावी बनाने के लिए 26 समूहों को आर्थिक सहायता प्रदान करने हेतु में 9,10,000/- रुपये की राशि रिवॉल्विंग फण्ड के रूप में उपलब्ध कराई। यह रिवॉल्विंग फण्ड 35,000/- रुपये प्रति समूह के हिसाब से उपलब्ध कराए गए।

रिवॉल्विंग फण्ड उपलब्ध कराने से पूर्व जिन समूहों के बैंक में खाते नहीं खुले हुए थे संस्था ने उन समूहों के बैंकों में खाते खुलवाए एवं समूहों का बैंकों से सम्पर्क स्थापित करवाया। इसके साथ-साथ संस्था ने समूहों के साथ मासिक बैठकों का नियमित आयोजन किया एवं मीटिंगों के द्वारा समूहों को विभिन्न सरकारी एवं ग़ैर सरकारी योजनाओं की जानकारियाँ मुहैया कराईं व साथ ही पंचायती राज संस्थाओं से भी समूहों का सम्पर्क स्थापित कराते हुए समूहों को उन्नत कृषि तकनीक एवं उन्नत खाद बीज आदि की जानकारियाँ भी उपलब्ध कराई गईं।

इस परियोजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति, पिछड़ी जाती एवं सामान्य वर्गो की गरीबी से नीचे जीवनयापन करने वाली महिलाओं को प्राथमिकता के आधार पर सहभागी बनाया गया। इन महिलाओं को उक्त परियोजना से जोड़कर इनके महिला स्वंय सहायता समूह बनाये गये एवं विभिन्न लाभ पहुंचाते हुए इनके साथ लक्ष्यानुरूप निम्नलिखित गतिविधियाँ सम्पादित की गईं-

परियोजना के लक्ष्य

- महिलाओं में आपसी मनमुटाव मिटाते हुए एक दूसरे के प्रति विश्वास बढ़ाना।
- सूदख़ोरों से छुटकारा दिलाते हुए कर्ज़दारी से मुक्त करवाना।
- विभिन्न गतिविधियों से जोड़कर आय में वृद्धि करना।
- विभिन्न जनोपयोगी सरकारी योजनाओं से अवगत कराते हुए उनसे जुड़ाव करवाना।

श्री दिलीप यादव वरिष्ठ कार्यक्रम अधिकारी, अरावली परियोजनान्तर्गत महिला समूहों को ऋण चेक प्रदान करते हुए।

संचालित की गई गतिविधियाँ

- नियमित मासिक बैठकों का आयोजन।
- समूहों का बैंक से जुड़ाव एवं खाता खुलवाना।
- समूहों के लिए बैंक से ऋण मुहैया कराना।
- योजना से रिवॉल्विंग फण्ड उपलब्ध कराना एवं उसका उचित उपयोग करवाना जैसे गाय, भैंस, बकरी, कृषि आदि के लिए।
- समय-समय पर विभिन्न रोज़गारोन्मुख कार्यशालाओं का आयोजन।
- महिला दिवस समारोह का आयोजन।
- परिवार एवं समाज में महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाने का प्रयास।

- सरकारी एवं ग़ैर सरकारी कार्यक्रमों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के प्रयास।
- महिलाओं में आपसी मन-मुटाव दूर कर उनमें आपसी विश्वास बढ़ाते हुए उन्हें संगठित करने का प्रयास।
- समूह एवं समूह सदस्यों की क्षमता वर्धन के क्रम में बैठक एवं कार्यशालाओं का आयोजन।
- कृषि कार्य से सम्बन्धित उन्नत खाद बीज एवं जुताई-बुवाई की तकनीकी जानकारियाँ उपलब्ध कराना।
- बालिका शिक्षा के लिए जन चेतना द्वारा लोगों को तैयार करना।

परियोजना के प्रभाव

- आपसी विश्वास एवं आत्मविश्वास में वृद्धि
- महिलाएं अपनी बात रखने लगीं।
- महिलाओं ने आपसी लेन-देन, हिसाब-किताब करना सीखा।
- महिलाओं द्वारा लिए गए ऋण को समय-समय पर निर्धारित किस्तों द्वारा चुकाना अपनी ज़िम्मेदारी समझी।
- छोटी-छोटी पारिवारिक ज़रूरतों को पूरा करने लगीं।
- ब्याजख़ोरों एवं सूदख़ोरों से छुटकारा।
- लेन-देन प्रक्रिया को सीखा।
- बैंक से जुड़ाव के कारण ऋण उपलब्धता में सरलता।
- महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति में सुधार।
- सरकारी एवं पंचायती राज कार्यक्रमों से जुड़ाव।
- घरेलू निर्णयों में महिलाओं के हस्तक्षेप से उनकी भागीदारी बढ़ी।
- विभिन्न सरकारी एवं ग़ैर सरकारी योजनाओं की जानकारियाँ उपलब्ध होने लगी।
- विभिन्न प्रयासों से महिला समूह एवं सदस्यों का क्षमता वर्द्धन।

इस तरह संस्थान ने उक्त परियोजना द्वारा क्षेत्र की ग़रीब, असहाय, विधवा आदि महिलाओं को समूहों में सदस बनाकर इस परियोजना में जोड़कर उक्त गतिविधियाँ संचालित कर उनको आत्मनिर्भर बनाने एवं उनका आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति सुधार के क्रम में सफल प्रयास किए। परिणामस्वरूप आशानुकूल सफलता मिली।

यह परियोजना अभी वर्तमान में है और आगे भी इस परियोजना के अन्तर्गत विभिन्न गतिविधियाँ संचालित होती रहेंगी।

न्यायोचित व्यापार अभियान (11 नवम्बर, 2005 से 15 नवम्बर, 2005)

सिकोई डिकोन-जयपुर के सहयोग एवं मार्ग-दर्शन से तीन संस्थानों ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बूबानी-अजमेर, सवेरा संस्थान-श्रीनगर, लोकार्पण संस्थान-किशनगढ़ द्वारा ज़िला उद्योग क्राफ्ट मेला व पुष्कर में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस हेतु इन संस्थानों को दुकान नम्बर 110 आवन्टित की गई। इस मेले में प्रदर्शनी के साथ-साथ न्यायोचित व्यापार के क्रम में किसान हस्ताक्षर अभियान, ऊँटगाड़ी पर रैली, जाग्रति गीत, नुक्कड़

न्यायोचित व्यापार के अन्तर्गत रैली निकालते हुए ग्रामीण किसान।

नाटक, कठपुतली कार्यक्रम आदि किए गए।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य लोगों जैसे निदेशक, वकील, लेखाकार, प्रोफेसर, सरपंच, वार्ड पंच, अध्यक्ष आदि ने अभियान का अवलोकन किया एवं अभियान को सराहनीय क़दम बताया।

अन्य गतिविधियाँ

- पल्स पोलियो अभियान में अहम भूमिका।
- सरपंचों, वार्ड पंचों आदि की क्षमता वर्द्धन के प्रयास।
- आपसी विवादों का स्थानीय स्तर पर निपटारा
- बालिका सरकारी एवं ग़ैर सरकारी कार्यक्रमों में सहयोग करना। उचित संसाधन उपलब्ध कराना।

संस्था की उपलब्धियाँ

- अकाल प्रभावित क्षेत्र के लोगों को लगातार रोज़गार।
- ग्राम विकास कमेटी, महिला समूह, नवयुवक मण्डल आदि संगठनों का निर्माण।
- मेढ़बन्दी, चारागाह विकास, नाडी निर्माण के द्वारा कृषि पैदावार में वृद्धि।
- पानी की आवक में बढ़ोतरी एवं जल स्तर में सुधार।
- क्षेत्र के बाल श्रमिकों में कमी एवं उनका शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ाव एवं मासिक स्टाईफण्ड उपलब्ध कराना।

- महिला समूह द्वारा क्षेत्र की महिलाओं को आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न वर्ग के लोगों द्वारा ब्याज के रूप में किये जाने वाले शोषण से बचाना।
- सुरक्षित प्रसव एवं शिशु मृत्यु दर में कमी।
- बच्चों का स्कूलों में जुड़ाव एवं ठहराव।
- ग्रामीण समुदाय को स्वच्छता के प्रति जागरुक करने के लिए ग्रामीण सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान चलाना।
- महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के क्रम में सोशल मोबेलाइज़ेशन परियोजना द्वारा रिवॉल्विंग फण्ड उपलब्ध करवाकर रोजगार परक गतिविधियों से जोड़ना।

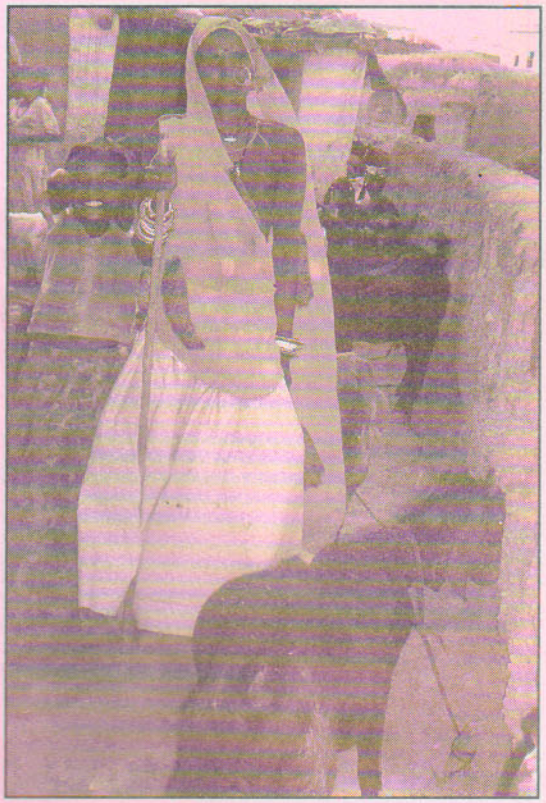

सिरोही नस्ल की बकरी के साथ समूह की महिला।

संस्था की भावी सोच

- रोज़गार की नियमितता।
- मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम।
- वन संरक्षण एवं पर्यावरण चेतना।
- जैविक खाद के उपयोग के लिए लोगों को प्रेरित करना।
- पंचायती राज में महिलाओं की भूमिका सुनिश्चित करना।
- उन्नत कृषि तकनीक की जानकारी देना।
- बाल श्रम उन्मूलन एवं बालिका शिक्षा को बढ़ावा।
- कम ख़र्च के रीति रिवाज स्थापित करना।
- अकाल की विभीषिका से बचाव के स्थाई उपाय।
- पशु संरक्षण एवं नस्ल सुधार।
- महिलाओं को प्राकृतिक संसाधनों के उपयुक्त दोहन द्वारा आत्मनिर्भर बनाने के क्रम में उपाय।
- महिला संगठन का निर्माण एवं उसे प्रभावी बनाना।
- जल संरक्षण कार्य को प्रभावी बनाना।

सहयोगी संस्थायें :-

- सी.आर.एस. - जयपुर।
- नाबार्ड, अजमेर
- श्रम मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली।
- अरावली, जयपुर।
- डी.सी.एन.सी., जयपुर
- राजस्थान महिला कल्याण मण्डल, अजमेर
- स्थानीय चंदा
- आर.सी.डी समाज सेवी संस्था मदार
- कपार्ट, जयपुर।
- यू.एन.डी.पी., नई दिल्ली
- जिला परिषद्, अजमेर
- क्षेत्रिय प्रचार कार्यालय सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, अजमेर
- वन मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली

संस्थान कार्यक्षेत्र 2005-2006

क्रं.सं.	गांव का नाम	परिवार संख्या	कुल जनसंख्या	ग्राम पंचायत	पंचायत समिति
1.	श्रीनगर	2139	12834	श्रीनगर	श्रीनगर
2.	गेगल	156	1095	गेगल	श्रीनगर
3.	ऑखरी	425	2972	गेगल	श्रीनगर
4.	चांदियावास	155	1085	गेगल	श्रीनगर
5.	दांता	148	1036	गेगल	श्रीनगर
6.	मुहामी	450	3365	बूबानी	श्रीनगर
7.	बूबानी	548	3240	बूबानी	श्रीनगर
8.	भूडोल	800	5045	भूडोल	श्रीनगर
9.	गोडियावास	188	1156	गोडियावास	श्रीनगर
10.	नौलखा	325	2275	गोडियावास	श्रीनगर
11.	सराणा	430	3015	ऊँटडा	श्रीनगर
12.	ऊँटडा	650	3578	ऊँटडा	श्रीनगर
13.	ठिठाणा	60	418	नरवर	श्रीनगर
14.	निम्बूकियॉ	65	446	नरवर	श्रीनगर
15.	गगवाना	1000	6328	गगवाना	श्रीनगर
16.	कायमपुरा	160	865	कायमपुरा	श्रीनगर
17.	गुवारडी	110	724	रसुलपुरा	श्रीनगर
18.	बडल्या	230	1618	बडल्या	श्रीनगर
19.	बलवन्ता	418	2926	दांता	श्रीनगर
20.	सणोद	547	3814	सणोद	श्रीनगर
21.	तिलाना	627	4289	तिलाना	श्रीनगर
22.	कुराडी	153	1069	तिलाना	श्रीनगर
23.	चान्दसेन	129	907	तिलाना	श्रीनगर
24.	नबाव	165	1132	तिलाना	श्रीनगर
25.	तिहारी	254	1709	तिहारी	श्रीनगर
26.	ढाणी पुरोहितान	408	2856	मालीयों की बाडी	सिलोरा
27.	राठोंडा की ढाणी	62	438	मालीयो की बाडी	सिलोरा
28.	देवमण्ड की ढाणी	73	507	मालीयो की बाडी	सिलोरा
29.	रामनेर की ढाणी	214	1484	रामनेर की ढाणी	श्रीनगर
30.	खोडा गणेश	208	1414	बूबानी	श्रीनगर
31.	शालीकी ढाणी	93	640	बूबानी	श्रीनगर
32.	जाटली	154	1058	गेगल	श्रीनगर
33.	खायडा	125	876	बूबकियॉ	भिनाय
34.	पिपलीयॉ	85	595	बूबकियॉ	भिनाय
35.	सोलकला	135	945	बूबकियॉ	भिनाय
36.	सोलखुर्द	65	465	बूबकियॉ	भिनाय
37.	बूबकियॉ	475	1230	बूबकियॉ	भिनाय
38.	रेण	90	635	बूबकियॉ	भिनाय
39.	हीरापुरा	185	1295	धातौल	भिनाय
40.	गुजरवाडा	115	809	धातौल	भिनाय
41.	धातौल	180	1265	धातौल	भिनाय
42.	उदयगढ खेडा	205	1408	धातौल	भिनाय
43.	सोबडी	132	560	सोबडी	भिनाय
44.	धना	78	488	सोबडी	भिनाय
45.	तेलाड़ा	104	547	सोबडी	भिनाय
46.	चावण्डिया	119	532	सोबडी	भिनाय
47.	झबरकिया	74	473	सोबडी	भिनाय
48.	माताजी का खेड़ा	61	315	सोबडी	भिनाय

संस्थान में वर्तमान कार्यकर्ता

क्रं.सं.	नाम स्टाफ	पद	कार्य अवधि
1.	शंकर सिंह रावत	कार्यक्रम निदेशक	9 वर्ष
2.	आशीष कुमार तिवारी	कार्यक्रम अधिकारी	2 वर्ष
3.	शम्भू सिंह रावत	समन्वयक	8 वर्ष
4.	तेजाराम मेघवंशी	परियोजना अधिकारी (SHGs)	8 वर्ष
5.	विजय सिंह	परियोजना अधिकारी (शिक्षा)	6 वर्ष
6.	अनिल कुमार कलोसियाँ	परियोजना अधिकारी (स्वास्थ्य)	3 वर्ष
7.	रणजीत जाट	परियोजना अधिकारी (कृषि)	2 वर्ष
8.	संदीप जैन	कम्प्यूटर ओपरेटर/लेखाकार	3 वर्ष
9.	कैलाश चन्द मेघवंशी	प्रधानाध्यापक	4 वर्ष
10.	पूनम चन्द	प्रधानाध्यापक	4 वर्ष
11.	महावीर सिंह रावत	प्रधानाध्यापक	1 वर्ष
12.	रणजीत सिंह	अध्यापक	1 वर्ष
13.	महावीर खटीक	अध्यापक	1 वर्ष
14.	शैतानसिंह रावत	अध्यापक	1 वर्ष
15.	मोहन लाल	अध्यापक	1 वर्ष
16.	गवरीनन्दन	(व्यवसायिक अध्यापक)	1 वर्ष
17.	विशन सिंह	(व्यवसायिक अध्यापक)	1 वर्ष
18.	नीरा सिंह	लेखाकार	5 वर्ष
19.	ज्ञान सिंह	लेखाकार	1 वर्ष
20.	मुकेश सिंह	लेखाकार	1 वर्ष
21.	कमला देवी	सहायिका	4 वर्ष
22.	रूकमा देवी	सहायिका	1 वर्ष
23.	मुन्नी देवी	सहायिका	1 वर्ष
24.	गागू सिंह रावत	SHGs सुपरवाईजर	4 वर्ष
25.	सीताराम शर्मा	SHGs कार्यकर्त्ता	1 वर्ष
26.	प्रधान जाट	SHGs कार्यकर्ता	1 वर्ष
27.	मैना देवी	स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता	2 वर्ष
28.	निर्मला देवी	स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता	2 वर्ष
29.	सीमा देवी	स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता	2 वर्ष
30.	गीता देवी	स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता	2 वर्ष
31.	पारसी देवी	स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता	2 वर्ष
32.	ओमी देवी	स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता	2 वर्ष
33.	सीता देवी	स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता	1 वर्ष
34.	लाली देवी वेष्णव	सहा0 कर्मचारी	1 वर्ष

संस्थान की वर्तमान कार्यकारिणी

क्र.सं.	नाम व पिता का नाम	पूर्ण पता	पद	
1.	श्री अनिलकुमार माथुर पुत्र स्व. श्री देवीलाल माथुर	म. नं. बी-510, पंचशील यू.आई.टी. कॉलोनी, माकडवाली रोड, अजमेर	अध्यक्ष	
2.	श्री दीनदयाल शर्मा पुत्र स्व. श्री मूलचन्द शर्मा	85, पुरानी मण्डी, अजमेर	उपाध्यक्ष	
3.	श्री शंकरसिंह रावत पुत्र श्री श्योजीसिंह रावत	गांव-दांता आखरी, पो. गेगल वाया-गगवाना, जिला-अजमेर	सचिव	
.4.	श्री शम्भूसिंह रावत पुत्र श्री भैरूसिंह रावत	मु. पो. बूबानी, वाया-गगवाना, जिला-अजमेर (राज.)	कोषाध्यक्ष	
5.	श्रीमती अरूणादेवी पत्नी श्री राधेश्याम बोराणा	मु. पो.-लाड़पुरा, जिला-अजमेर	कार्यकारिणी सदस्य	
6.	श्रीमती सरस्वती भाट पत्नी श्री विक्रम भाट	मु. पो. गोवल्या, वाया पुष्कर जिला-अजमेर	कार्यकारिणी सदस्य	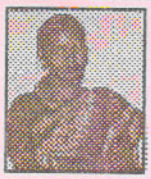
7.	श्रीमती भाणीदेवी पत्नी श्री नानूसिंह	मु. पो. बूबानी, वाया-गगवाना जिला-अजमेर (राज.)	कार्यकारिणी सदस्य	
8.	श्रीमती लक्ष्मीदेवी पत्नी श्री किशनलाल	मु. पो.-गोडियावास, वाया-गगवाना, जिला-अजमेर (राज.)	कार्यकारिणी सदस्य	
9.	श्रीमती रतना देवी पत्नी श्री जतनसिंह रावत	गांव-गुवारडी पो.-लाडपुरा, अजमेर (राज.)	कार्यकारिणी सदस्य	

GRAMIN MAHILA VIKAS SANSTHAN,
BOOBANI DIST AJMER

BALANCE SHEET AS ON 31.3.2006

LIABILITIES	2005-06	2004-05	ASSETS	2005-06		2004-05	
Capital Fund	355372.41	833607.41	Fixed Assets		353854.00		283596.00
			Opening Balance	283596.00		306974.00	
Loans	213852.00	93200.00	Add Purchase	107341.00		4880.00	
				390937.00		311854.00	
			Les Dep	37083.00		28318.00	
			Closing Balance		215370.41		643211.41
			Cash in Hand	44532.41		156325.41	
			Cash at Bank	170838.00		486886.00	
Total	569224.41	926807.41	Total		569224.41		926807.41

PLACE AJMER

DATE 24.4.2006

GRAMIN MAHILA VIKAS SANSTHAN

CHAIRMAN

SECRETARY

Sunil Nigam & Associates Chartered Accountants AUDITED AJMER

SUNIL NIGAM AND ASSOCIATES
CHARTERED ACCOUNTANTS

SUNIL NIGAM
PROPRIETOR

GRAMIN MAHILA VIKAS SANSTHAN,
BOOBANI DIST AJMER

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE PERIOD ENDED 31.3.2006

EXPENDITURE	2005-06		2004-05		INCOME	2005-06		2004-05	
Contingencies		1646085.00		1130620.00	Grants , Contributions		1125363		1757511.00
Gramin Mahila Vikas San	139290.00		124989.00		and Misc Income				
C.R.S and R.C.D.	115208.00		91500.00		Gramin Mahila Vikas San	102567.00		203163.00	
Child Labour Project	224712.00		252251.00		C.R.S and R.C.D.	108570.00		91260.00	
Capart	174100.00		453665.00		Child Labour Project	120435.00		288468.00	
Sampurn Swachta			79928.00		Capart	174100.00		437110.00	
Sewa Mandir	6480.00				Sampurn Swachta			50039.00	
UNDP Social Mobilisation	986295.00		128287.00		Sewa Mandir	6480.00			
					UNDP Social Mobilisation	613211.00		687471.00	
Depreciation		37083.00		28318.00					
					Deficit		557805.00		
Surplus				598573.00					
Total		1683168.00		1757511.00	Total		1683168.00		1757511.00

PLACE AJMER

DATE 24.4.2006

GRAMIN MAHILA VIKAS SANSTHAN

CHAIRMAN

SECRETARY

Sunil Nigam & Associates Chartered Accountants AUDITED AJMF

SUNIL NIGAM AND ASSOCIATES
CHARTERED ACCOUNTANTS

SUNIL NIGAM
PROPRIETOR

Programme Expenditure
From Year 2003-04, 2004-05 & 2005-06

	2003-04	2004-05	2005-06
Education NCLP	488763	288468	224712
Women and Child Health CRS & RCDSSS	132265	91260	115208
UNDP Social Mobilization Women Empowerment	Nil	128287	986295
CAPART Drought Relief	341653	453665	Nil
CAPART- FEC Programme	Nil	Nil	174100
Sampurn Swachta Programme, Jila Parishad	245872	79928	Nil
Drought Relief & Water Shed	2618217	1507642	Nil
Total	3826770	2549250	1500315

Programme Expenditure For Three Year

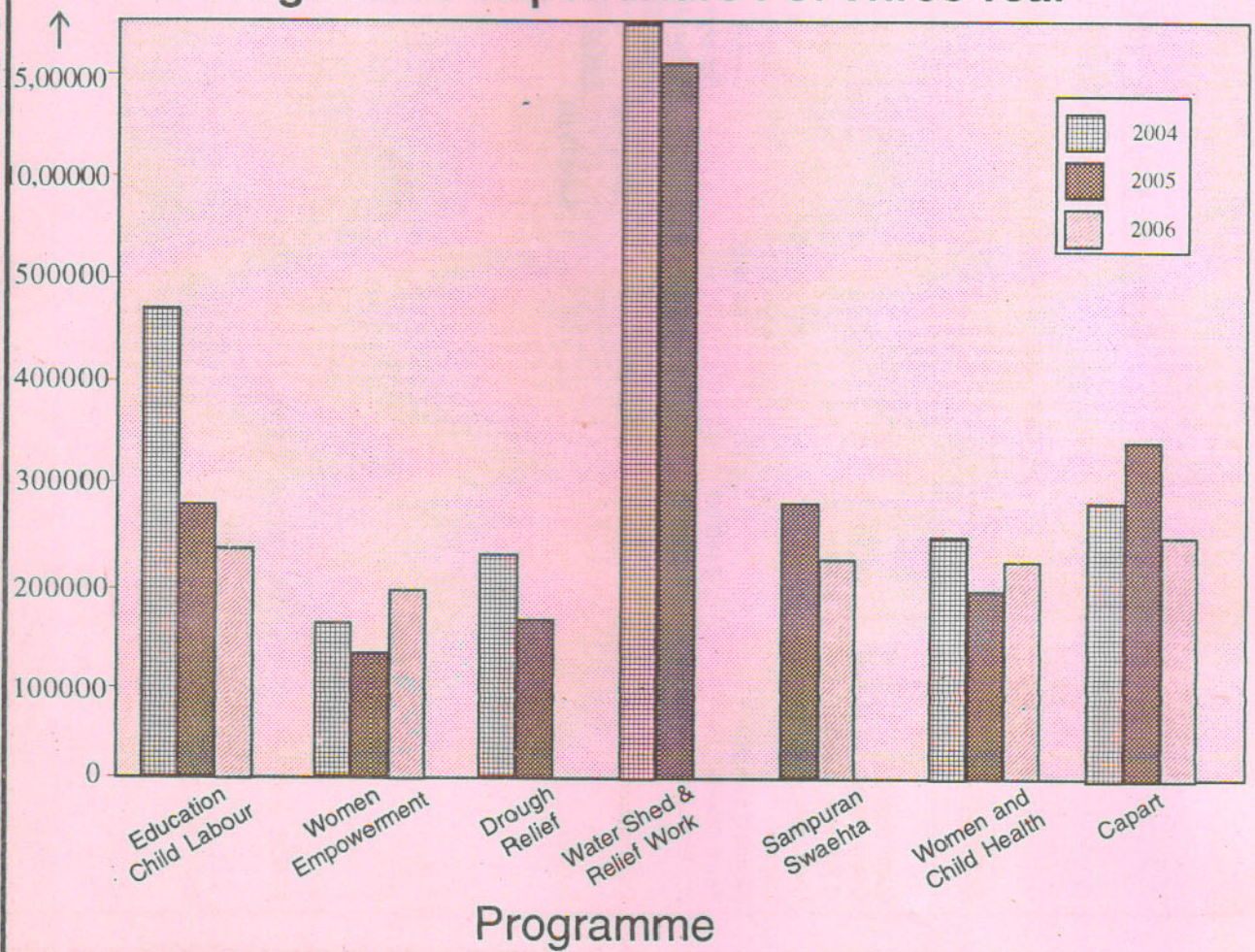

Areas Covered by the Organization

The organization is working in the District of Ajmer covering the 3 blocks of Shrinagar, Silora (Kishangarh) and Bhinay and serving 48 villages. Total families served is of population of 87717 The awareness programme through *Traditional communication media* is being carried out in the entire Dictrict of Ajmer.

AJMER DISTRECT

Programme Area
GMVS H. Office

GRAMIN MAHILA VIKAS SANSTHAN, KISHANGARH

Organisational Structure

Total	
Staff Members	34
Male	23
Female	11
Traind Staff	09
Technical Staff	03
Full Time	14
Part Time	20

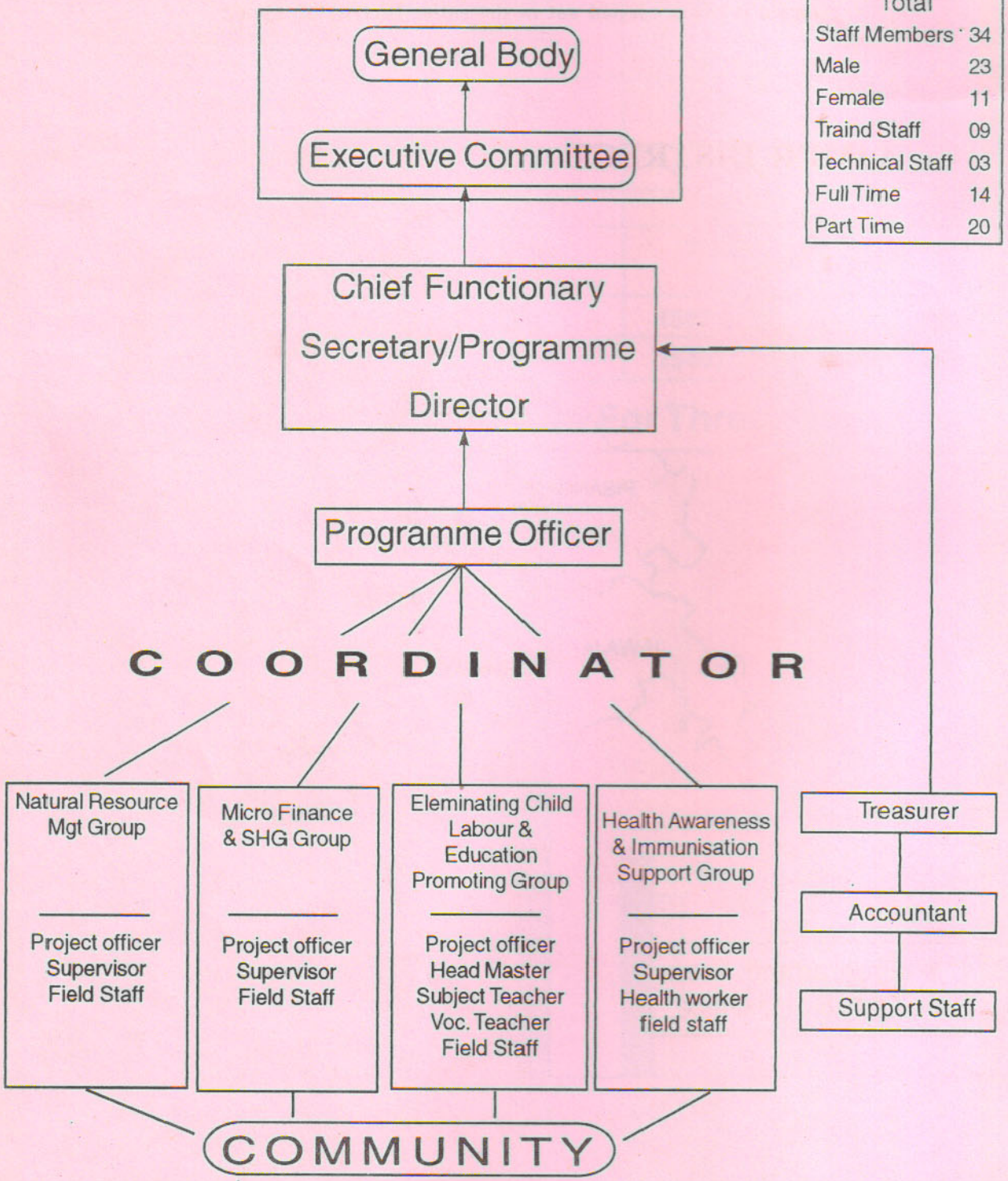

श्री जस्साराम चौधरी मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद अजमेर स्वयं सहायता समूह की महिला को चैक प्रदान करते हुए

नवोदय शिक्षा निकेतन ढ़ाणी पुरोहितान के बच्चे पोषाहार का लुफ्त उठाते हुए

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के अन्तर्गत जन चेतना कार्यक्रम में श्री जे.के. जैन कृषि अधिकारी यूनियन बैंक ग्रामीण जनता को स्वास्थ्य जानकारी प्रदान करते हुए एवं मंच पर उपस्थित अन्य अधिकारीगण।

संस्था सहयोग से संचालित स्कूल के छात्र-छात्राएँ गणतंत्र दिवस समारोह में व्यायाम प्रदर्शन करते हुए

श्रीमती सरिता गैना, जिला प्रमुख अजमेर स्वयं सहायता समूह की महिला को ऋण चैक प्रदान करते हुए

संस्था द्वारा आयोजित शिविर में ग्रामीण महिलाएं व पुरुष सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त करते हुए।

विश्व व्यापार संगठन की कृषि नीतियों के विरोध में संस्था के सहयोग से आयोजित रैली के द्वारा जिला कलक्टर को ज्ञापन देने जाती ग्रामीण महिलाएं व पुरुष

संस्थान के प्रमुख कार्यकर्त्तागण

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

प्रधान कार्यालय :

पटाखा फैक्ट्री के पास, राजा रेड़ी,
मदनगंज-किशनगढ़ -305 801
जिला-अजमेर (राजस्थान) भारत
फोन : +91-1463-516005
ई-मेल : graminmahilavikas@yahoo.co.in

शाखा कार्यालय :

मु.पो.-बूबानी, वाया-गगवाना
जिला-अजमेर -305 023 (राजस्थान) भारत
फोन : +91-0145-2300609

Print at : Pragati Printers, Ajmer Tel. : 2421887